



हिन्दी भाषा का वैश्वीकरण और उसकी चुनौतियाँ

चेष्टा, लेक्चरर, डिपार्टमेंट ऑफ़ हिंदी, संत श्री प्राणनाथ परनामी टी.टी. कॉलेज, पदमपुर

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा का महत्व राष्ट्रीय सीमाओं से परे निरंतर बढ़ रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, सोशल मीडिया, सिनेमा, साहित्य, शिक्षा तथा डिजिटल माध्यमों ने हिन्दी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है और विभिन्न देशों में इसका प्रयोग संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा व्यावसायिक गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। प्रवासी भारतीय समुदायों, हिन्दी शिक्षण संस्थानों और वैश्विक डिजिटल मंचों ने हिन्दी की लोकप्रियता को व्यापक आधार प्रदान किया है। तथापि, हिन्दी के वैश्वीकरण की प्रक्रिया अनेक चुनौतियों से भी जुड़ी हुई है। अंग्रेज़ी भाषा का बढ़ता प्रभुत्व, उच्च शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान में हिन्दी के सीमित प्रयोग, तकनीकी शब्दावली की जटिलता, अनुवाद संबंधी समस्याएँ तथा डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता हिन्दी के विकास में बाधक हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक संचार के प्रभाव से हिन्दी के स्वरूप, शब्दावली और अभिव्यक्ति शैली में भी परिवर्तन हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य वैश्वीकरण के संदर्भ में हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसके अंतरराष्ट्रीय विस्तार की संभावनाओं तथा उससे संबंधित प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करना है। साथ ही, यह अध्ययन हिन्दी के संवर्धन में डिजिटल तकनीक, भाषा-शिक्षण, अनुवाद, भाषायी नीतियों और सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका को रेखांकित करता है। निष्कर्षतः, हिन्दी को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने के लिए आधुनिक तकनीक के प्रभावी उपयोग, गुणवत्तापूर्ण ज्ञान-संसाधनों के विकास तथा अन्य भाषाओं के साथ सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इससे हिन्दी न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रख सकेगी, बल्कि वैश्विक ज्ञान, संचार और रोजगार के क्षेत्र में भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति स्थापित कर सकेगी।